विचार बिन्दु

चापलूस आपको हानि पहुंचा कर अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहता है। –हरिऔध

राजस्थान के शैक्षिक स्तर में गिरावट---ASER, 2022

'असर' (Annual Status of Education Report), 2022 दिनांक 18 जनवरी 2023 को जारी हुई है। यह रिपोर्ट भारत की शैक्षिक क्षेत्र में काम करने वाली अग्रणी संस्था 'प्रथम' के द्वारा, भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में स्वैच्छिक संगठनों के सहयोग से सर्वेक्षण एवं साक्षात्कार के आधार पर जारी की जाती है। इस प्रकार की रिपोर्ट वर्ष 2005 से जारी की जा रही है। असर – 2022, इस कड़ी में 12वीं रिपोर्ट है। यह सर्वेक्षण पूरे भारत के कुल 627 जिलों में से 616 में किया गया एवं इस सर्वेक्षण में 19060 गांव को सम्मिलित किया गया।

374554 परिवारों को सर्वेक्षण में शामिल किया गया। यह सर्वेक्षण मुख्य रूप से 16 वर्ष तक की आयु के बालक–बालिकाओं के शैक्षिक स्तर को आंकने की दृष्टि से किया गया।

कई वर्षों से किए जा रहे सर्वे की विश्वसनीयता इसी से प्रकट होती है कि कई शिक्षाविदों द्वारा शिक्षा संबंधी योजनाओं को बनाते समय 'असर' की रिपोर्ट का संदर्भ दिया जाता है।

इस सर्वेक्षण में मुख्य रूप से बच्चों की, समझ के साथ पढ़ने की तथा सरल गणना करने की क्षमता की जांच की जाती है। ऐसा मानना है कि भाषा एवं अंक गणितीय जोड़, बाकी, गुणा, भाग करने की क्षमता अत्यंत महत्त्वपूर्ण है और आगे की पढ़ाई की नींव का काम करती है।

मेरा स्वयं का मानना है कि सभी बच्चों में भाषा एवं अंकगणितीय गणना में पारंगत होना अत्यंत महत्वपूर्ण एवं आवश्यक है। इसके अलावा विद्यालयों में नामांकन, विद्यालयों के आधारभूत सुविधाओं की स्थिति, बालिकाओं के शौचालय की स्थिति पर भी रिपोर्ट दी गई है।

हम इस लेख में राजस्थान से संबंधित रिपोर्ट की चर्चा करेंगे। राजस्थान के सभी 33 जिलों में यह सर्वे किया गया। वर्ष 2018 के पश्चात यह प्रथम सर्वेक्षण था। 4 वर्ष की अवधि में कोरोना के 2 वर्ष भी सम्मिलित हैं। सबसे पहले यह उचित होगा कि असर –2022 के निष्कर्षों पर एक दृष्टि डाल लें।

नामांकन में निश्चित रूप से पूरे भारत के साथ ही राजस्थान में भी वृद्धि हुई है और 2022 में यह 98.2% हो गया है। सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वालों का प्रतिशत 2018 के 60% से बढ़कर 69% हो गया है। उल्लेखनीय है कि 15–16 वर्ष की आयु की बालिकाओं में केवल 9.4% ही ऐसी हैं जो विद्यालय नहीं जा रही हैं।

वर्ष 2012 में जहां सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले पांचवी कक्षा के विद्यार्थियों में से 46.8% दूसरी कक्षा का पाठ पढ़ सकते थे, वहीं 2022 में यह घटकर 38.2% रह गया है। इसका अर्थ यह हुआ कि पांचवीं कक्षा में पढ़ने वाले लगभग 62% बालक बालिका दूसरी कक्षा का स्तर भी प्राप्त नहीं कर पाए हैं। इसी तरह, 2012 में जहां आठवीं कक्षा में पढ़ने वाले छात्रों में से 77.5% दूसरी का पाठ पढ़ सकते थे, 2022 में यह घटकर 71.5 प्रतिशत रह गया है। इसका अर्थ यह हुआ कि शैक्षिक स्तर जहां पहले ही बहुत कमजोर था अब वहां और भी कमजोर हो गया है।

पाठकों के लिए यह जानकारी चौंकाने वाली हो सकती है की आठवीं में अध्ययनरत छात्रों में से 1.5% छात्र तो एक से नौ तक के अंक पहचान नहीं सकते हैं। 100 तक के अंक पहचानने वालों की संख्या 33% है। आठवीं के बच्चों में 35% ऐसे हैं जो भाग करना जानते हैं। इसी प्रकार पांचवीं में पढ़ने वाले में से केवल 13% बच्चे भाग देना जानते हैं।

वर्ष 2012 में जहां तीसरी कक्षा के 18.8% बच्चे घटाव करना जानते थे वहीं अब 2022 में केवल 11.8% ही ऐसा कर सकते हैं। इनमें भी, सरकारी विद्यालयों में तीसरी में पढ़ने वाले बच्चों में तो। घटाव करने वाले केवल 4.9% ही हैं एवं निजी विद्यालयों में ऐसा करने वाले छात्रों का प्रतिशत 26.3% है। स्पष्ट है कि सरकारी विद्यालयों की स्थिति अत्यंत दयनीय है। यह उल्लेख करना आवश्यक है कि घटाव करने की क्षमता दूसरी कक्षा के विद्यार्थियों से अपेक्षित है।

कक्षा 5 के विद्यार्थियों में से 2012 में 21.2% भाग दे सकते थे, वहीं अब 2022 में केवल 13.3% ही भाग देना जानते हैं। सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले पांचवी के बच्चों में तो केवल 6.3% ही भाग देना जानते हैं। इसी प्रकार कक्षा आठ के पढ़ने वाले बच्चों में 2012 में 45.1% में भाग देना जानते थे, वहीं यह 2022 में यह घटकर 35.7% रह गया है। सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले आठवीं के बच्चों में से केवल 29% बच्चे ही ऐसे हैं जो भाग कर सकते हैं जबकि निजी विद्यालयों में यह 54% है।

आशा की जानी चाहिए कि -2022 के परिणामों को ध्यान में रखते हुए प्रारंभिक शिक्षा व्यवस्था में उपयुक्त बदलाव किए जाएंगे और 'असर' की अगली रिपोर्ट में राजस्थान और देश की बेहतर स्थिति सामने आए। ऐसा होने पर ही हम आज के बच्चे और कल के नागरिकों के साथ न्याय कर पाएंगे।

वर्ष 2012 में आठवीं में पढ़ने वाले बच्चों में से 39.8% अंग्रेजी के वाक्य पढ़ सकते थे जबकि 2022 में ऐसा करने वाले बच्चों का प्रतिशत 35.2 प्रतिशत रह गया है।

सरकारी विद्यालयों में तो आठवीं के बच्चों में वाक्य पढ़ने वालों का प्रतिशत केवल 26.9% है। पांचवी कक्षा के बच्चों में से जहां 2012 में 14.8% वाक्य पढ़ सकते थे वहीं अब 2022 में यह केवल 10% बच्चे ही ऐसा कर सकते हैं।

असर– 2022 में यह तथ्य भी सामने आया है कि राजस्थान के विद्यालयों में आधारभूत सुविधाओं में वृद्धि हुई है। पेयजल की सुविधा 2010 में 68% प्रतिशत विद्यालयों में उपलब्ध थी, वहीं अब यह 75% में उपलब्ध है। 2010 में 65.4% विद्यालयों में शौचालय थे जबकि 2022 में यह सुविधा 86.8% में है। लड़कियों के लिए प्रयोग करने योग्य शौचालय जहां 2010 में केवल 50% विद्यालयों में थे, वहीं अब यह 84% विद्यालयों में उपलब्ध है। इसी प्रकार पुस्तकालय की किताबों का उपयोग भी जहां 2010 में 23% बच्चों द्वारा किया जा रहा था वहां अब 36% बच्चों के द्वारा किया जा रहा है।

उपरोक्त आंकडे विस्तार से इसलिए दिए गए हैं, ताकि यह पता लग सके कि राजस्थान में प्रारंभिक शिक्षा का स्तर कितना गिर चुका है? यह सब इसके बावजूद कि बहुत बड़ी धनराशि विद्यालय, शौचालय बनाने और कंप्यूटर खरीदने पर एवं शिक्षकों के प्रशिक्षण पर खर्च की गई है। इस सब के बावजूद, यदि यह स्थिति बनी है तो आगे चलकर किस प्रकार के नागरिक देश में उपलब्ध होंगे और इनके रोजगार प्राप्त करने की क्षमता या संभावना कितनी होगी, यह विचारणीय है। कोई आश्चर्य नहीं कि, राजस्थान में बेरोजगारी का प्रतिशत देश के अन्य राज्यों से अधिक है। जब प्रारंभिक कक्षाओं के विद्यार्थी सरल भाषा में पढ़ना और गणना करना भी नहीं सीख पाएंगे तो आगे चलकर के किसी भी प्रकार की पढ़ाई कर लें, उनका आधार बहुत कमजोर ही रहेगा। कभी–कभी ऐसा लगता है कि आज से 30–40 वर्ष पूर्व शिक्षा का स्तर कहीं बेहतर था, जबकि आधारभूत सुविधाएं कहीं कम थीं।

इन सब से निष्कर्ष यही निकलता है कि विद्यालयों में सब कुछ हो रहा है पर शिक्षा गौण हो गई है। शिक्षक भी शिक्षा के अतिरिक्त कई प्रकार के अन्य कार्यों में लगे हुए हैं।

यह अच्छी बात है कि भारत सरकार ने 'निपुण भारत' नामक योजना प्रारंभ की है जिसके अंतर्गत 2025 तक तीसरी कक्षा के शत–प्रतिशत बच्चों में पढ़ने और गणना की दक्षता विकसित करने का लक्ष्य रखा है। वर्तमान में तो जिन बच्चों का यह सर्वे किया गया उनमें से 10% ही ऐसा करने में सक्षम हैं। इसका मतलब यह है कि स्थिति की गंभीरता को स्वीकार करके बहुत तेजी से इस दिशा में काम करने की आवश्यकता है।

सम्भव है, राज्य सरकार इस रिपोर्ट को सिरे से खारिज कर दें और यह दावा करे कि राजस्थान का शैक्षिक स्तर तो देश में नंबर एक पर है, जैसा कि नेशनल अचीवमेंट सर्वे के आधार पर सामने आया था। जब हम 'असर' जैसी सर्वमान्य, निष्पक्ष रिपोर्ट को ही खारिज कर देंगे, तो वैसी ही बात होगी, जैसे हम चेहरे की खराबी पर ध्यान देने के बजाय शीशे को दोष दें। इस रिपोर्ट को खारिज करने के बजाए उचित होगा कि, इस प्रकार की खराब स्थिति के कारणों का पता लगाया जाए और उन्हें दूर करने का प्रयास किया जाए।

आजकल शिक्षक अधिकांश समय केवल आंकडे तैयार करने में ही लगा है। बच्चों के शैक्षिक स्तर में सुधार तभी संभव है, जब विद्यालयों में अधिकाधिक समय शिक्षक, बच्चों के साथ बिताएं और उन्हें अन्य कई प्रकार के अनावश्यक कार्यों से मुक्त किया जाए। शिक्षकों को आंकड़ों के मकड़जाल से निकालकर आनंददायी वातावरण में शिक्षा देने का माध्यम बनाया जाए, ताकि कम से कम प्रारंभिक शिक्षा के बाद 100% छात्र, भाषा और गणना में तो दक्षता प्राप्त कर ही लें। यह भी एक विडंबना है कि राजस्थान, जिसके द्वारा शिक्षा में किए गए प्रयोग जैसे लोक जुम्बिश और शिक्षा कर्मी के सिद्धांत पूरे देश में अपनाए गए, वहीं राजस्थान की सरकारी शिक्षा व्यवस्था में इनकी सीख का समावेश नहीं किया गया। परिणाम स्वरुप, 10 वर्षों में शिक्षा के स्तर में गिरावट आई है।

यह भी उल्लेखनीय है कि कोरोना के कारण जितना शैक्षिक स्तर में नुकसान हुआ है, उसको पूरा करने हेतु सरकार ने कोई गंभीरता नहीं दिखाई और कोई ठोस योजना नहीं बनाई। केवल राज्य स्तर पर शिक्षकों और छात्रों का अनुपात का बखान करने से काम नहीं चलेगा। यह देखना होगा कि शिक्षकों का पद स्थापन भी राजस्थान के सभी क्षेत्रों में, विशेषकर दूरस्थ क्षेत्रों में समान रूप से हो और सभी विद्यालयों में शिक्षकों की संख्या छात्रों के अनुपात में हो।

आशा की जानी चाहिए कि –2022 के परिणामों को ध्यान में रखते हुए प्रारंभिक शिक्षा व्यवस्था में उपयुक्त बदलाव किए जाएंगे और 'असर' की अगली रिपोर्ट में राजस्थान और देश की बेहतर स्थिति सामने आए। ऐसा होने पर ही हम आज के बच्चे और कल के नागरिकों के साथ न्याय कर पाएंगे।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

मेडिसिन और लॉ – न्याय की विकृत परिणति

डॉ. श्रीगोपाल काबरा

राजस्थान के एक कस्बे की रहने वाली विवाहित महिला को जयपुर के जाने–माने निजी अस्पताल में भर्ती कराया गयां। तेज सिर दर्द, उल्टियां, बुखार और बहकी बातें। सघन जांचें हुईं। ब्रेन का सी टी स्केन हुआ। निदान – फेफड़ों में मिलियरी ट्यूबरक्यूलोसिस और ब्रेन में सेरीब्रम, सेरीबेलम, कार्पस केलोसम और ब्रेन स्टेम में सब जगह फैली हुई टी.बी. की गांठें। स्थिति गंभीर। टी.बी. का इलाज चला। आराम मिला, स्थिति में सुधार हुआ। खाने–पीने और अपना काम करने लगी। अस्पताल में भर्ती रह कर कुछ करना नहीं था, टी.बी. की दवाइयां लम्बी चलनी थी, अतः छुट्टी दे दी गई। कुछ दिन बाद महिला की माँ का डॉक्टर साहिबा के पास फोन आया। बताया, वह दवाईयाँ नहीं ले रही है, और हालत ठीक नहीं है। डॉक्टर ने अस्पताल लाने को कहा। नहीं लाए। बहुत हालत गिरने और बेहोशी आने पर अस्पताल ले कर आये। आई सी यू में भर्ती किया गया। सघन इलाज चला। न्यूरोलॉजिस्ट, कार्डियोलाजिस्ट, पल्मोनोलॉजिस्ट आदि सभी विशेषज्ञों की देख रेख में इलाज। बावजूद इसके हालात गिरते गए। भर्ती होने के दूसरे दिन कार्डियाक एरेस्ट हुआ, हृदय गति व सांस रुक गई। सी पी आर कर रोगिणी को रिसिटेट किया गया (जीवित किया गया) और बेहोश मरीज को मेकेनिकल वेन्टीलेशन पर लिया गया, मोनिटर लगे। हालत गिरती गई। हृदय गति गड़बड़ हुई, कार्डियोलॉजिस्ट आये। हालांकि कार्डियाक मोनिटर लगा हुआ था फिर भी विस्तृत जांच के लिए आई सी यू में उपलब्ध 20 चैनल इसीजी मशीन पर ईसीजी ली गई। कार्डियोलॉजिस्ट ने इसीजी देखी। उसमें कोई एब्नोर्मिलिटी नहीं थी। उन्होंने ईसीजी की फाईडिंगज मरीज की फाइल में रिकोर्ड की और स्थिति के अनुरूप दवा लिख दी। ईसीजी रिपोर्ट मरीज की फाइल में लगा दी। दो दिन बाद मरीज को फिर कार्डियाक अरेस्ट हुआ। सीपीआर किया गया लेकिन हृदय गति नहीं लौटी।

रोगिणी की माँ जो जिला कांग्रेस कमेटी की जिला अध्यक्ष थी, चाची जो भाजपा महिला कमेटी की अध्यक्ष थी और पिता जो वकालत के पेशे में थे, ने अलग–अलग शिकायतें कीं। नोटिस भेजे, थाने में शिकायत की, आर टी आई लगाई, राज्य मानवाधिकार आयोग में शिकायत की, राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग में शिकायत, मेडिकल काउन्सिल मे शिकायत और नेशनल कंज्यूमर कोर्ट में 2 करोड़ का दावा किया।

शिकायत का आधार –

रोगिणी को ब्रेन की गंभीर टी.बी. थी तो किसी बड़े न्यूरोलाजी सेन्टर में रेफर क्यो नहीं किया गया?

मरीज की फाइल में जो ईसीजी लगी थी उसमें किसी अन्य मरीज का नम्बर, नाम, और उम्र थी और इस गलत रिपोर्ट के आधार पर इलाज करने से मरीज की मृत्यु हुई।

पुलिस का फरमान आया। डॉक्टर को मरीज का रिकार्ड ले कर थाने में हाजिर होने को कहा। फिर अस्पताल आकर, लेडी डॉक्टर के बयान और मरीज का रिकार्ड ले गये। जांच की। मेडिकल बोर्ड बिठाया और रिपोर्ट फाइल की।

मेडिकल काउन्सिल ऑफ इन्डिया ने केस स्टेट मेडिकल काउन्सिल को भेज कर रिपोर्ट भेजने का कहा। स्टेट मेडिकल काउन्सिल का फरमान, डाक्टर जवाब और पेशेन्ट का समस्त रिकार्ड ले कर 12 डाक्टरों की एथिक्स कमेटी के सामने हाजिर हो। लेडी डॉक्टर प्रस्तुत हुईं। बहस हुई। ईसीजी में दूसरे रोगी का नाम आदि होने के लिए बताया गया कि यह एक टेक्निकल एरर थी। एमरजेन्सी में ईसीजी करने से पहले मरीज का नाम आदि नहीं डाला गया, फलस्वरूप डिफाल्ट मोड से पूर्व रोगी का नाम आदि ईसीजी में आया। ईसीजी नार्मल थी। उसके आधार पर कोई इलाज नहीं किया गया।

निर्णय, मरीज की गंभीर अवस्था का इलाज यथावत् हुआ, कोई गलती नहीं हुई। ईसीजी में जैसा गलत इन्द्राज हुआ वैसा आइन्दा न हो इसका ध्यान रखें।

राज्य मानवाधिकार आयोग का फरमान, जवाब के साथ चिकित्सक पेश हो। जवाब पेश कर दिया। आयोग ने सीएमएचओ को जांच कर अपनी रिपोर्ट देने को कहा। सीएमएचओ का पहले फरमान, हाजिर हों। फिर डिप्टी सीएमएचओ आ कर बयान, जवाब और रिकार्ड लेकर चले गये। उन्होने सारा रिकार्ड आयोग को भेज दिया। आयोग ने कहा, आपने अपनी रिपोर्ट नहीं भेजी है। जांच कर रिपोर्ट भेजें।

फिर एक दिन टेलीफोन पर सूचना देकर आयोग अध्यक्ष स्वयं जांच करने अस्पताल आ गये। लाल बत्ती लगी गाड़ी से उतरे। बोले, मोका मुआइना करेंगे। डिप्टी सुपरिन्टेडेन्ट आई सी यू में ले गई। कैप मास्क लगाने को दिया तो बोले, जन प्रतिनिधि हूं। मुंह छुपा कर नहीं जाउंगा, मुंह छुपाना होता तो यहां आता ही क्यों। डॉक्टरो के साइड रूम में बैठाया। केस फाईल दे दी। बोले, केस से जुड़े सभी डॉक्टरों, नर्सेज, तकनीशियन आदि को बुलाओ। सुपरिन्टेडेन्ट ने अर्ज किया, प्रभारी डॉक्टर तो छूट्टी पर हैं, बाकी सब जो 7 दिन तक आई सी यू में उस वक्त डयूटी पर थे, उन्हें आईडेन्टिफाई कर बुलाना पड़ेगा। आप लिखित में आर्डर कर दें, वे सब काम छोड़ कर आ जायेंगे। तभी उनका कोई रिश्तेदार उनसे मिलने आ गया। बताया, बेटा न्यूरो सर्जरी में भर्ती है। अध्यक्षजी ने सुपरिन्टेडेन्ट को ताकीद की, आप देख लीजिऐगा। कोई शिकायत न आए। फिर बोले, चलिए मरीज को देख आते हैं, इसी बहाने अस्पताल का काम काज देख लेंगे।

नेशनल ह्यूमन राइटस कमीशन में शिकायत की। राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग ने राजस्थान के प्रिन्सिपल सेक्रेटरी को केस में जांच करवा कर रिपोर्ट भेजने को कहा। प्रिन्सिपल सेक्रेटरी ने हैल्थ सेक्रेटरी को और उन्होंने मेडिकल कालेज के प्रिन्सिपल को मेडिकल बोर्ड बिठा कर जांच करवाने को कहा। पुलिस की कंप्लेंट पर बोर्ड पहले ही केस की जांच कर रिपोर्ट दे चुका था। राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के पास रिपोर्ट नहीं पहुंची तो उन्होंने कड़ा रुख अपनाते हुए प्रिन्सिपल सेक्रेटरी को रिपोर्ट व समस्त रिकार्ड लेकर व्यक्तिशः हाजिर होने का नोटिस भेज दिया। हड़कम्प मच गया। प्रिन्सिपल ने आनन–फानन में फिर उसी बोर्ड को तुरंत जांच कर आदेश की अनुपालना करने को कहा। बोर्ड ने प्रिन्सिपल सेक्रेटरी का आदेश संलग्न कर फरमान भेजा कि केस से जुड़े सभी चिकित्सक, नर्सेज, तकनीश्यिन व अन्य पेशेन्ट रिकार्ड, सी टी स्केन, ईसीजी रिपोर्ट व अन्य सभी जांचों की रिपार्ट ले कर बोर्ड के सामने उपस्थित हों। यह आखिरी नोटिस है। हैल्थ सेक्रेटरी ने अपने अधीन सीएमएचओ को अस्पताल से समस्त रिकार्ड ले कर व्यक्तिशः मेडिकल बोर्ड को देने का आदेश दिया। समस्त रिकार्ड उन्हें दे दिया गया। बोर्ड के वरिष्ठ न्यूरोलोजिस्ट को ब्रेन की सीटी स्केन में सारे ब्रेन में टीबी की गांठें, विशेष कर ब्रेन स्टेम में जहां सारे वाइटल सेन्टर होते हैं, देख कर यह रिपोर्ट देने में कोई दुविधा नहीं हुई कि मरीज की मौत मस्तिष्क की गंभीर टीबी के कारण हुई। चिकित्सा में कोई चूक नहीं हुई। उन्होंने अपनी रिपोर्ट और उसके आधार सम्बन्धी सीटी स्कैन, ईसीजी, अन्य जांचें और इलाज का पूरा रिकोर्ड राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग को भेज दिया। मानवाधिकार आयोग ने रिपोर्ट शिकायतकर्ता को दी। वह संतुष्ट नहीं था। तब आयोग ने अपने डी आई जी को जांच करवाने के आदेश दिए। पूरा रिकार्ड पी जी आई के फोरेन्सिक एक्सपर्ट को भेजा गया। उनकी रिपोर्ट आयी, मरीज की मृत्यु का कारण ब्रेन की टी.बी.। इलाज विधिवत् हुआ। ईसीजी रिपोर्ट में टेक्निकल कारणों से गलत नाम आ गया था जिसका मरीज के इलाज पर कोई असर नहीं पड़ा। ईसीजी रिपोर्ट नारमल थी। उसके आधार पर कोई दवा नहीं दी गई। जो दवाईयाँ इसके बाद दी गईं, वे मरीज की अवस्था के अनुरूप थीं। आयोग ने अपना निर्णय दे दिया। शिकायतकर्ता ने सुप्रीम कोर्ट के एक वकील से अस्पताल व चिकित्सकों को नोटिस भेजा। उन्हे जवाब दे दिया गया। साथ ही जो अलग अलग जांचें हुई उनकी रिपोर्ट और निर्णय वकील द्वारा भेज दिए गये। उन्होंने राष्ट्रीय उपभोक्ता मंच में दो करोड़ का दावा किया था।

मंच ने समस्त रिकार्ड का अध्ययन और विवेचन कर सभी लांछनों को नकारते हुए विस्तृत निर्णय के साथ दावा एडमिशन स्टेज पर खारिज कर दिया। मृतका के माता, पिता और चाची अभी भी मानने को तैयार नहीं हैं। इतना सब करने के बाद भी उनकी धारणा है कि गरीब दलित की निष्पक्ष सुनवाई नहीं होती। कहते हैं, वे राष्ट्रपति से न्याय की गुहार लगायेंगे। महिला चिकित्सक की जान अब भी सांसत में है। पूछती है, कितनी जगह शिकायत कर सकते हैं? कहां–कहां केस कर सकते हैं?

वकील कहते हैं, यह मरीज का मौलिक अधिकार है। और जिसको शिकायत करे उनका यह अधिकार और दायित्व है कि उचित कारवाही कर वे 'प्रार्थी' को न्याय दिलवायें, राहत दें। वे मुझसे पूछती हैं, क्या चिकित्सक का कोई मौलिक अधिकार नहीं है? दुर्भाग्य से मेडिकल नेग्लीजेंस के केसेज में विधिवत् निष्पक्ष जांच की कोई व्यवस्था ही नहीं है? सभी इसे अपना अधिकार क्षेत्र मानते हैं। त्रासदी यह है कि यह केस अपवाद नहीं है। न्याय नहीं, चिकित्सक और अस्पताल पर दबाव बनाने के लिए ये हथकंडे अपनाना आम है।

–डॉ. श्रीगोपाल काबरा,
वरिष्ठ चिकित्सक, जयपुर

चांद दिखने के साथ ख्वाजा साहब के उर्स की विधिवत् शुरुआत, जन्नती दरवाजा खुला

अजमेर, (कासं)। सूफी संत ख्वाजा मोइनुद्दीन हसन चिश्ती के 811वें सालाना उर्स की विधिवत शुरुआत सोमवार को रजब महीने का चांद दिखाई देने के साथ हुई। आम जायरीन के लिए जन्नती दरवाजा भी तड़के खोल दिया गया। ख्वाजा गरीब नवाज के सालाना 811वें उर्स की औपचारिक शुरुआत से पहले सोमवार को जिला प्रशासन के द्वारा दरगाह में चादर पेश की गई। प्रशासनिक अधिकारियों ने दरगाह में चादर पेश कर उर्स शांतिपूर्वक तरीके से संपन्न हो इसे लेकर के दुआ मांगी।

उर्स की विधिवत शुरुआत के दौरान खोले गए जन्नती दरवाजे से गुरजते जायरीन।

■ **जिला प्रशासन ने दरगाह में चादर पेश कर उर्स शांतिपूर्वक संपन्न होने के लिये दुआ मांगी**

सैय्यद फजले हासन चिश्ती ने बताया कि सोमवार दरगाह स्थित पीर साहब की पहाड़ी से तोप दागकर शादियाने एवं नगाड़े बजाकर उर्स के आगाज मुनादी की गई और इसके साथ उर्स की धार्मिक रस्में भी शुरू हो गई। दरगाह के महफिल खाने में सोमवार रात को उर्स की पहली महफिल दरगाह दीवान सैयद जैनुअल आबेदीन अली खान की सदारत में हुई। छह दिवसीय सालाना उर्स अपनी धार्मिक रस्मों के ही उर्स परवान चढ़ता जाएगा।

उर्स में शरीक होने के लिए जायरीन के यहां पहुंचने का सिलसिला शुरू हो गया है। जयपुर और आसपास के इलाकों से बड़ी संख्या में लोग पैदल चल कर यहां पहुंचे हैं। रास्ते में भी कई काफिले चल रहे हैं। दरगाह क्षेत्र में अब भीड़ बढने लगी है। देर रात तक दरगाह बाजार और आसपास के क्षेत्र में रौनक बनी हुई है।

विश्व विख्यात सूफी संत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती के दरबार में 26 जनवरी को वसंत पेश किया जाएगा। शाही कव्वाल वसंत से जुड़े सूफियाना कलाम पेश करते हुए चलेंगे। सैय्यद फजले हासन चिश्ती ने बताया कि सूफी संत ख्वाजा मोईनुद्दीन हसन चिश्ती का 811वां उर्स मनाया जा रहा है। इस दौरान अकीदतमंद द्वारा चादर चढ़ाने का सिलसिला शुरू हो गया।

संभागीय आयुक्त बीएल मेहरा ने बताया कि हर वर्ष की भांति इस बार भी जिला प्रशासन ने दरगाह में चादर चढ़ाई है। देश में प्रेम भाईचारा बना रहे और और शांतिपूर्ण तरीके उर्स संपन्न हो इसे लेकर के दुआ मांगी है। अजमेर रेंज आईजी रूपेन्द्र सिंह ने कहा कि 811वें उर्स में भीड़भाड़ शुरू हो गई है। पुलिस प्रशासन चाक.चौबंद होकर 24 घंटे ड्यूटी कर रहा है। एक राजा से उर्स की औपचारिक शुरुआत होगी। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी जिला प्रशासन की तरफ से चादर पेश की गई है और उर्स शांतिपूर्वक तरीके से संपन्न होए सभी कर्मचारी अपनी ड्यूटी ढंग से निभाए से लेकर के दुआ मांगी गई है। जिला प्रशासन की चादर पेश करने के दौरान संभागीय आयुक्त बीएल मेहरा, रेंज आईजी रूपेन्द्र सिंघ, जिला कलेक्टर अंशदीप, एसपी चूनाराम जाट, एडिशनल ,सपी विकास सांगवान, वैभव शर्मा, प्रियंका रघुवंशी, दरगाह सीओ गौरीशंकर, ट्रैफिक सीओ रामअवतार सहित अंजुमन कमेटी के सचिव सरवर चिश्ती वह दरगाह के खादिम मौजूद रहे।

सोमवार को कर्नाटक में भाजपा के पूर्व नेता व मंत्री जी जनार्दन रेड्डी ने सोमवार को सपरिवार दरगाह जियारत की। खादिम सलमान चिश्ती ने रेड्डी व उनके परिवार के सदस्यों को जियारत करवाई। रेड्डी ने ख्वाजा की मजार पर अकीदत के फूल व चादर पेश कर देश में अमन चैन शांति भाईचारे की दुआ मांगी।

मेले में सचिन पहलवान ने 131 किलो की नाल उठाई

करौली, (निसं)। नंदे भूमिया पर आयोजित देवनारायण भगवान के मेले में भाजपा के वरिष्ठ नेता ने 51हजार रुपये दान स्वरूप भेंट किए। वहीं मेले में आयोजित नाल दंगल में सचिन पहलवान ने 131 किलो की नाल उठाकर इतिहास बनाया।

सोमवार को करौली के निकट नंदे भूमिया के देवस्थान पर देवनारायण मेले में भाजपा के वरिष्ठ नेता सतवीर चंदीला मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे जहां उनका पंच पटेलों ने माला साफा पहनाकर भव्य स्वागत किया और रथ पर बैठा कर मंदिर तक ले गए। जहां उन्होंने नंदे भूमिया के दर्शन लाभ लेते हुए पंच पटेलों को 51हजार रुपये दानस्वरूप भेंट किए। दंगल के केसरी रहे दंगल में केसरी रहे पहलवान सचिन को आशीर्वाद देते हुए कहा कि आगे और भी ऊंचाइयो पर पहुंचे।

तीस युवाओं ने बंजर भूमि को हरा-भरा बनाया

सूरतगढ़, (निसं)। वृक्ष मित्र संस्था ने शहर को ग्रीन सिटी बनाने के जज्बे के साथ कार्य करते हुए बंजर भूमि को हरा भरा बनाकर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया है। संस्था के सदस्यों द्वारा अब तक करीब 8 हजार पौधे लगाए जा चुके हैं। जिनमें से ढाई हजार से अधिक पेड़ बन चुके हैं।

इन वृक्ष मित्रों का संकल्प है कि पूरे क्षेत्र को ग्रीन सिटी के नाम से विकसित करें। इसके लिए 30 युवाओं की टीम प्रतिदिन सुबह पौधारोपण के साथ पेड़–पौधों की देखभाल भी करती है। सोमवार सुबह भी शहर से सटे किशनपुरा आबादी स्थित श्री शिव नंदीशाला में कुछ ऐसा ही नजारा सामने आया जब संस्था के सदस्य जी जान से पौधों की सार संभाल में जुटे थे। संस्था के 30 से अधिक युवाओं ने करीब 1000 से अधिक पौधे इस बंजर भूमि पर बारिश के शुरुआती दौर में लगाए थे। सराहनीय बात यह भी है कि यह यह सब कार्य बिना किसी सरकारी मदद के साथ करने का बीड़ा उठाया है। इन युवाओं ने ठाना है कि हर हाल में 5 हजार पौधों को रोपित कर पेड़ बनाना है।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

मंगलवार 24 जनवरी, 2023

माघ मास, शुक्ल पक्ष, तृतीया तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2079, शतभिषा नक्षत्र रात्रि 9:58 तक, वारियान योग रात्रि 9:36 तक, गर करण दिन 3:23 तक, चन्द्रमा आज कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य–मकर, चन्द्रमा–कुम्भ, मंगल–वृष, बुध–धनु, गुरू–मीन, शुक्र–मकर, शनि–कुम्भ, राहु–मेष, केतु–तुला राशि में।

आज रवियोग सांय 4:28 तक है। रात्रि 9:58 से पुनः आरम्भ होगा। भद्रा रात्रि 1:59 से बुधवार दिन 12:35 तक है। आज गौरी तृतीया और वरद एवं कुन्द चतुरथी, तिल चौथ, पंचक है। आज से रज्जब मु. मास 7 आरम्भ होगा।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़ियाः चर 9:59 से 11:19 तक, लाभ–अमृत 11:19 से 1:58 तक, शुभ 3:18 से 4:38 तक।

राहूकालः 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 7:20, सूर्यास्त 5:58

मेष
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

वृष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।

मिथुन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित अनुबंध प्राप्त होंगे। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा।

कर्क
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। व्यक्तिगत परेशानियों के कारण मन में असंतोष बना रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

सिंह
परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सोच–विचार होगा। महत्वपूर्ण परामर्श मिलेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। घर–परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृश्चिक
घर–परिवार में सुख–शांति बनी रहेगी। परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी।

मकर
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा।

कुंभ
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनःस्थिति में सुधार होगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यक्तिगत कार्य के लिए यात्रा संभव है।

मीन
घर–परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।